12 नवम्बर, 2016 को पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित किए जा रहे National Conference of Safe and Sustainable Hospital (SASH 2016) के उद्घाटन समारोह के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

हिमाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल जस्टिस वी.एस. कोकजे, एयर मार्शल पवन कपूर, भारतीय विद्यापीठ के संस्थापक कुलपति डॉ. पतंगराव कदम, एयर मार्शल सी.के. रंजन, सह्याद्रि अस्पताल की अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक डॉ. चारू दत्ता आप्टे, एकेडमी ऑफ हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन के अध्यक्ष मे.ज. आर.के. गर्ग (अवकाशप्राप्त), उपस्थित विशिष्ट अतिथिगण, देवियो और सज्जनो!

1. Academy of Hospital Administration (AHA) के तत्वावधान में आयोजित किए जा रहे "**National Conference of Safe and Sustainable Hospital (SASH 2016)**" में शामिल होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। सन् 1987 में अपनी स्थापना के समय से ही यह अकादमी लोगों की स्वास्थ्य देखभाल संबंधी समस्याओं का समाधान करके सरकार के प्रयासों में बहुत प्रभावी ढंग से सहायता कर रही है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि The first wealth is health और यह भी उतना ही सच है कि Good health is not something we can buy. However, it can be extremely valuable Savings Accounts. इसलिए अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को हम सभी जानते हैं और इसकी आवश्यकता एवं जन–जन पर, विशेषकर गरीब तबके के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों से हम सभी अच्छी तरह से परिचित हैं।

2. भारत का हेल्थ सेक्टर दुनिया के सबसे बड़े हेल्थ केयर सिस्टम्स में से एक है। हमारे हेल्थकेयर सिस्टम में बहुत–सी खूबियां और खामियां भी हैं। भारत में health sector के दो हिस्से हैं। एक पब्लिक सेक्टर और दूसरा प्राइवेट सेक्टर। बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ स्वास्थ्य की जरूरतों की पूर्ति के लिए प्राइवेट हेल्थ सेक्टर में बहुत तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है। एक अनुमान के अनुसार शहरी क्षेत्रों में लगभग 70 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 63 प्रतिशत लोग अपनी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के लिए प्राइवेट सेक्टर पर निर्भर हैं और हम सभी जानते हैं कि सरकारी क्षेत्र के अस्पतालों पर अपनी क्षमता की तुलना में स्वास्थ्य सुविधाएं

प्रदान करने का दबाव है और उन्हें किस प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है। भारत में आज भी मेडिकल इंश्योरेंस का फैलाव विश्व के अन्य देशों की तुलना में बहुत सीमित है। इसलिए, अधिकतर लोगों को इलाज के लिए अपनी जेब से पैसा खर्च करना पड़ता है और यह काफी महंगा होता है। इसलिए सरकारी क्षेत्रों के अस्पतालों पर दबाब और अधिक बढ़ जाता है। कहीं–कहीं तो स्थिति इतनी गंभीर है कि दिल्ली के कुछ अस्पतालों में diagnostic test और surgery के लिए लगभग डेढ़–दो साल की waiting होती है। वहीं हमारे प्राइवेट सेक्टर के कई अस्पताल एवं वहां उपलब्ध सुविधाएं विश्वस्तरीय हैं जिससे दुनिया के दूसरे देशों के लोग भी यहां इलाज कराने आते हैं। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में तकनीक के साथ–साथ मरीज को भावनात्मक सम्बल भी मिलता है, स्नेह और सेवा हम भारतीयों की पहचान है और विदेशी लोगों के लिए भारतीय अस्पताल एक अच्छा एवं नया अनुभव होता है। भारत दुनिया में सबसे अधिक biologically active region में से एक हैं और यहां सभी प्रकार के मौसम और जलवायु के कारण जो विविधतापूर्ण अनुभव हमारे चिकित्सकों को प्राप्त होता है, वह अनुभव उन्हें काफी परिपक्व एवं कुशल बना देता है। शायद इसीलिए हमारे चिकित्सक कुशल माने जाते हैं।

3. प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर के अलावा भारत के चिकित्सा क्षेत्र में एक और divide है जिन्हें हम urban और rural divide के रूप में कह सकते हैं। हमारी अधिकतर चिकित्सा सुविधाएं शहरी क्षेत्रों में ही उपलब्ध हैं। हमारे गांवों में जहां कि 68 प्रतिशत population निवास करती है वहां केवल 2 प्रतिशत डॉक्टर हैं। इसका कारण गांवों में बुनियादी सुविधाओं के अभाव में डॉक्टर काम नहीं करना चाहते हैं और इसलिए भी शहरी क्षेत्रों में प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर दोनों, अस्पतालों पर काफी दबाब पड़ता है।

4. वर्तमान में हमारा हेल्थ सेक्टर 7,15,000 करोड़ रु. के लगभग है जिसके सन् 2020 तक दुगुना हो जाने की संभावनाएं हैं। इन सब बातों की पृष्ठभूमि में इस Conference का महत्व और भी बढ़ जाता है। यह देखकर वास्तव में बहुत खुशी हुई है कि इस प्रकार के राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन से स्वास्थ्य देखभाल से जुड़े लोगों को एक मंच मिला है और Hospital Management और Technology के क्षेत्र में जितनी तेजी से उन्नति हो रही है,

उसे देखते हुए योजना तैयार करने और व्यवस्था को समय–समय पर upgrade करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन से इस आवश्यकता को पूरा करने में बहुत मदद मिलेगी। **विश्वस्तरीय अस्पताल प्रबंधन हम तभी दे पाएंगे जब इस दिशा में और व्यापक विचार विमर्श हो एवं रोगियों के साथ–साथ अस्पताल के कार्मिकों का भी ख्याल रखा जाए।**

5. Sustainability should be embraced as a core value in every sector. The whole world is talking about Sustainable Development Goals. There are 17 Goals and 169 targets under SDGs. Goal No. 3 talks about ensuring healthy lives and promoting well-being for all at all ages, underpinned by 13 targets that cover a wide spectrum of WHO's work. India's support is in line with Indian Philosophy of returning back more than what one receives. In fact in a prayer we say that oh God! please keep my mental framework such that I always remain committed for giving more than what I receive.

6. The cost of medical education, rapid pace with which the technological advancement is taking place, extremely high land prices in urban areas and increased wages for technical and medical staff makes it obligatory for every hospital administration to keep pace with the medical advancement to achieve financial sustainability and also invest in new technology. It is absolutely essential for a hospital to be safe from clinical, environmental point of view for not only the patients but also its staff, visitors and people in the immediate neighbourhood. Hospitals often experience the opposite pulls and pressure of safe and sustainable hospitals.

7. Although sustainable development is closely interrelated with health and health promotion, in health care systems, these themes are hardly ever discussed and even more rarely implemented in combination. We see opportunities for sustainable development and health promotion, particularly in hospitals, since they

play a central role in health care systems. Furthermore, hospitals have significant and growing economic, social, and environmental impacts, which in turn cause adverse effects upon health.

8. The health care sector has a large and costly environmental footprint and hospitals are among most energy intensive facilities and the amount of waste generated by them and use of large quantity of various chemicals have major effects on public health. Reducing such pollution and green house gas emission would reduce the incidence of human disease thereby saving money for the health care system and society as a whole. This requires efficient, sustainable hospital buildings and operations. It has been assumed by many that intervention end at sustainability, good cost hospitals more to undertake than any savings that would accrue to them. However, findings in other countries have shown this concern to be misplaced. However, energy use reduction, waste reduction, more efficient purchase of operation use supply can go a long way in tackling these issues through reprocessing and reuse of single use medical devices wherever possible.

9. Hospitals must expand quality criteria in decision making to include sustainability and health gain improvement to improve its future viability and also contribute to global sustainability. So, "**reduce, reuse and recycle" should be the Mantra for all Hospitals.** Recycling hospital waste has significant potential and is another area where health professionals can have a positive impact.

10. Medical disposables have increasingly replaced reusables, due to lower perceived costs, infectious risks and personal opinion. The few life cycle analyses of medical products have found that reusable devices are generally both financially and environmentally preferable to single-use comparators.

11. अस्पताल प्रबंधन के क्षेत्र में कुछ नई–नई तकनीकें आईं हैं जिनसे स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना आसान हुए हैं। जैसे, इलेक्ट्रॉनिक चिप, जो रोग का पता लगा सकते हैं, रोबोटिक नर्स असिस्टेंट, रोबोट के द्वारा कम्प्यूटरीकृत सर्जरी, कृत्रिम रेटिना लगाया जाना, कृत्रिम अंग निर्माण एवं उसके rehabilitation की तकनीक, इत्यादि कुछ ऐसे उदाहरण हैं जिनसे स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। ऐसे उपकरण भी आ गए हैं जो रोगी के शरीर को स्कैन करके उसकी वर्तमान एवं संभावित स्वास्थ्य के बारे में सटीक भविष्यवाणी कर पाते हैं जिनसे रोगी को फायदा हो सकता है। यह सब तकनीक का सार्थक उपयोग माना जा सकता है।

12. आज लोग स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं के लिए मल्टी स्पेशियालिटी या सुपर स्पेशियालिटी अस्पताल की ओर रूख करने लगे हैं। लोग ऐसी जगह इलाज कराना चाहते हैं जहां उन्हें उस रोग विशेष का विशिष्ट उपचार मिले। पेशा और परिवेश को ध्यान में रखते हुए उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना भी उनका दायित्व है। उदाहरण के लिए, पर्वतीय क्षेत्रों में उंचाई से संबंधित विशेषज्ञ की व्यवस्था होनी चाहिए तो industry के क्षेत्र में अस्थमा, टी.बी., सिलीकोसिस इत्यादि रोगों के विशेषज्ञ की व्यवस्था होनी चाहिए। क्षेत्र विशेष जैसे गोरखपुर में जापानी इंसेफलाइटिस के इलाज हेतु कारगर प्रबंधन करना भी स्वास्थ्य प्रबंधकों की प्राथमिकता होनी चाहिए।

13. मित्रो! इस बात में कोई संदेह नहीं कि अपने देश के नागरिकों का स्वास्थ्य और कल्याण हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए। गंभीर बीमारियों सहित सभी प्रकार की बीमारियों से अपने नागरिकों की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हमें सबके लिए किफायती दर पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने पर जोर देना होगा। सरकार द्वारा स्वास्थ्य देखभाल को लेकर एक नई पहल 'सेहत (Social Endeavour for Health and Telemedicine)' की शुरूआत की गई है जिससे हेल्थ केयर के क्षेत्र में आम नागरिकों को जानने, समझने एवं उपयोग में लाने संबंधी जागरूकता बढ़ेगी और यह डिजिटल तकनीकों के इस्तेमाल के माध्यम से लोगों के लिए समुचित विकल्प बनकर उभरेगा। ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह काफी प्रभावी सिद्ध हो सकता है। सभी लोगों के स्वास्थ्य संबंधी हेल्थ रिकॉर्ड

को केन्द्रीकृत रखने की व्यवस्था हो सकती है क्या? ताकि रोगी की स्वास्थ्य संबंधी हालत की सम्पूर्ण जानकारी अस्पताल को उपलब्ध रहे जिससे न केवल रोगी का इलाज आसानी से हो सके बल्कि जांच पर आने वाला खर्च भी कम हो। **भारत सरकार ने अस्पतालों को स्वच्छ एवं संक्रमणरहित बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक नई स्कीम ''कायाकल्प'' प्रारंभ की है जिसमें इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने वाले अस्पतालों को पुरस्कार दिया जाता है।**

14. रोगियों के लिए एक सबसे बड़ी समस्या दवाइओं का अत्यधिक महंगा होना है। भारत जैसे देश, जो आर्थिक रूप से उतने सम्पन्न नहीं है, के लिए ब्रांडेड दवाओं की जगह जेनरिक दवाइयों का यदि उपयोग किया जाए तो काफी हद तक किफायती स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। इसके लिए सरकार की प्रधानमंत्री जन औषधि योजना के तहत मार्च 2017 तक 3000 जन औषधि स्टोर खोलने की योजना है। भारत में पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियां जैसे आयुर्वेदिक, युनानी, सिद्ध, योगा और नेचुरोपैथी इत्यादि भी सदियों से कार्यरत हैं जिसको विकसित करने एवं लोकप्रिय बनाने की दिशा में सरकार का पूरा प्रयास है। इसके लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ भी एक समझौता किया गया है ताकि भारतीय चिकित्सा पद्धति की पहचान वैश्विक स्तर पर हो।

15. मित्रो! पिछले तीन दशकों में Academy ने health care management के विभिन्न पहलुओं के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ी है। ऐसा इससे जुड़े सभी लोगों द्वारा लगन और प्रतिबद्धता से काम करने से ही संभव हो सका। उन्हें बधाई देते हुए मैं आशा करती हूं कि Academy देश के, विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में हमारे समाज के निर्धन और उपेक्षित वर्गों की सेवा के लिए किए जा रहे अपने सराहनीय प्रयासों को जारी रखेगी। मुझे विश्वास है कि इस सम्मेलन से स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र में शामिल विभिन्न क्षेत्रों के प्रोफेशनलों को एक मंच मिलेगा जिससे इस सम्मेलन का स्वास्थ्य देखभाल उद्योग के लिए स्वास्थ्य देखभाल प्रबंध के क्षेत्र में नए प्रयासों की जानकारी प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्था प्रदान करने का लक्ष्य प्राप्त होगा। मैं इस अवसर पर Academy और सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देती हूं। मैं कामना करती हूं कि आने वाले वर्षों में इसे और भी महत्वपूर्ण

सफलताएं प्राप्त हों और इस प्रकार इसे उन लोगों का सम्मान प्राप्त हो जिनकी सेवा करने के लिए इसकी स्थापना की गई थी।

16. हमारे अस्पताल सुरक्षित होने चाहिए, रोगियों, परिचारकों, स्टॉफ आदि के लिए सुरक्षित होने चाहिए। उपचार कम लागत वाली होनी चाहिए और पर्यावरण की दृष्टि से Sustainable होने चाहिए। **In the end, I would like to say "Make our health Care System healthy and caring."** इन्हीं शब्दों के साथ, मैं National Conference of Safe and Sustainable Hospital (SASH 2016) का सहर्ष शुभारंभ करती हूँ।

धन्यवाद।

————